15/12/2025

शब्दों का संसार: भाषा की विचित्र यात्रा

भाषा मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सोच, संस्कृति और पहचान का दर्पण है। प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो अपनी विशिष्टता और दुर्लभता के कारण विशेष स्थान रखते हैं। आज हम अंग्रेजी भाषा के कुछ ऐसे ही असामान्य शब्दों की यात्रा करेंगे जो हमें भाषा की विविधता और समृद्धि का अहसास कराते हैं।

Pauciloquent: अल्पभाषी की कला

लैटिन मूल से निकला शब्द "Pauciloquent" (पॉसिलोक्वेंट) उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो बहुत कम बोलते हैं। आधुनिक युग में जहाँ सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी बात कहने के लिए उत्सुक रहता है, वहाँ pauciloquent व्यक्तित्व एक दुर्लभ खजाना बन गया है।

भारतीय संस्कृति में मौन और संयमित वाणी को हमेशा से महत्व दिया गया है। महात्मा गांधी ने मौन के दिन रखे, बुद्ध ने विपश्यना में मौन को साधना का अंग बनाया। यह सब pauciloquent होने की कला के विभिन्न रूप हैं। कम बोलने वाला व्यक्ति अक्सर अधिक सोचता है, अधिक सुनता है और अधिक समझता है।

मनोविज्ञान के अनुसार, जो लोग स्वभाव से pauciloquent होते हैं, वे प्रायः अंतर्मुखी और गहन विचारक होते हैं। वे व्यर्थ की बातचीत में समय नष्ट करने के बजाय अर्थपूर्ण संवाद को प्राथमिकता देते हैं। हालांकि आधुनिक समाज में ऐसे लोगों को कभी-कभी असामाजिक या उदासीन समझ लिया जाता है, लेकिन वास्तव में उनकी चुप्पी उनकी शक्ति है।

Bloviate: शब्दाडंबर का प्रदर्शन

Pauciloquent के ठीक विपरीत है "Bloviate" (ब्लोवीएट)। यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो लंबे-चौड़े, आडंबरपूर्ण और अक्सर अर्थहीन भाषणों में लिप्त रहते हैं। राजनीति और सार्वजनिक जीवन में bloviate करने वालों की कमी नहीं है।

जब कोई नेता मंच पर घंटों तक भाषण देता है लेकिन कहता कुछ भी ठोस नहीं है, तो वह bloviate कर रहा होता है। जब कोई प्रोफेसर सरल बात को जटिल शब्दावली में उलझाकर प्रस्तुत करता है ताकि वह बुद्धिमान लगे, तो वह भी bloviate कर रहा होता है। यह शब्द अमेरिकी राष्ट्रपति वॉरेन जी. हार्डिंग से विशेष रूप से जुड़ा है, जो अपने लंबे और अस्पष्ट भाषणों के लिए जाने जाते थे।

आज के युग में सोशल मीडिया ने bloviation को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। लोग बिना सोचे-समझे लंबी-लंबी पोस्ट लिखते हैं, जिनमें सारभूत कुछ नहीं होता। यह शब्दाडंबर संवाद को कमजोर करता है और वास्तविक संचार में बाधा बनता है।

Borborygm: शरीर का संगीत

"Borborygm" (बॉरबोरिज्म) एक अत्यंत रोचक और वैज्ञानिक शब्द है जो पेट या आंतों से निकलने वाली गड़गड़ाहट की आवाज को दर्शाता है। यह ग्रीक शब्द "borborygmos" से लिया गया है, जो स्वयं एक ध्वन्यात्मक शब्द है - अर्थात इसका उच्चारण ही उस ध्वनि की याद दिलाता है जिसे यह दर्शाता है।

चिकित्सा विज्ञान में borborygm एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है। यह तब होती है जब गैस और तरल पदार्थ आंतों में गति करते हैं। भूख लगने पर यह आवाज अधिक तेज हो जाती है। हालांकि यह पूरी तरह प्राकृतिक है, सामाजिक परिस्थितियों में इसे अक्सर शर्मिंदगी का कारण माना जाता है।

भारतीय संस्कृति में शरीर की इन प्राकृतिक ध्वनियों को लेकर अलग दृष्टिकोण रहा है। आयुर्वेद में पाचन तंत्र की इन आवाजों को स्वास्थ्य का संकेतक माना जाता है। अगर आंतें ठीक से काम कर रही हैं तो borborygm होना स्वाभाविक है।

यह शब्द हमें याद दिलाता है कि हम केवल मस्तिष्क नहीं हैं - हम एक संपूर्ण जैविक प्रणाली हैं जिसमें हर अंग अपनी भूमिका निभाता है। हमारा शरीर लगातार अपनी भाषा में हमसे बात करता है, और borborygm उसी संवाद का एक हिस्सा है।

Brouhaha: हंगामे का नामकरण

"Brouhaha" (ब्रूहाहा) फ्रेंच मूल का शब्द है जो किसी घटना के चारों ओर फैले शोरगुल, हंगामे या अनावश्यक उपद्रव को दर्शाता है। यह शब्द ध्वन्यात्मक है और इसका उच्चारण ही अराजकता और कोलाहल की अनुभूति कराता है।

समाज में अक्सर छोटी-छोटी बातों पर बड़ा brouhaha मच जाता है। कोई सेलिब्रिटी कुछ विवादास्पद बोल देता है और मीडिया में तूफान आ जाता है। कोई राजनीतिक बयान आता है और सोशल मीडिया पर brouhaha शुरू हो जाता है। अक्सर यह हंगामा वास्तविक मुद्दे से कहीं अधिक बड़ा हो जाता है।

भारतीय समाज में भी brouhaha की कोई कमी नहीं है। फिल्मों के विवाद से लेकर खेल के मैदान तक, धार्मिक मामलों से लेकर राजनीतिक बयानों तक - हर जगह हंगामा होता रहता है। कभी-कभी यह brouhaha इतना बड़ा हो जाता है कि असली मुद्दा ही भुला दिया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि brouhaha में भाग लेना मानव स्वभाव का हिस्सा है। लोग उत्तेजना और नाटक की ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित होते हैं। लेकिन बुद्धिमानी इसी में है कि हम यह पहचान सकें कि कौन सा हंगामा वास्तव में महत्वपूर्ण है और कौन सा केवल शोर है।

Absquatulate: गायब होने की कला

"Absquatulate" (एब्स्क्वाचुलेट) उन्नीसवीं सदी का अमेरिकी स्लैंग है जिसका अर्थ है अचानक और रहस्यमय तरीके से गायब हो जाना या भाग जाना। यह शब्द हास्यपूर्ण और नाटकीय दोनों है।

आधुनिक युग में absquatulate करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। कुछ लोग सोशल मीडिया से अचानक गायब हो जाते हैं, कुछ लोग अपनी नौकरी छोड़कर दुनिया घूमने निकल जाते हैं, और कुछ तो अपनी पूरी जिंदगी ही बदल देते हैं।

भारतीय परंपरा में संन्यास की अवधारणा absquatulate का एक गहन रूप है। जब कोई व्यक्ति सांसारिक जीवन छोड़कर आध्यात्मिक यात्रा पर निकल जाता है, तो वह एक प्रकार से absquatulate ही कर रहा होता है। हालांकि यहाँ उद्देश्य आध्यात्मिक है, लेकिन क्रिया वही है - पुरानी पहचान को छोड़कर नए जीवन की ओर बढ़ना।

कभी-कभी absquatulate करना आवश्यक हो जाता है। जब परिस्थितियाँ असहनीय हो जाएं, जब मानसिक स्वास्थ्य दांव पर लग जाए, या जब जीवन में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता हो - तब गायब होने की यह कला जीवनरक्षक साबित हो सकती है।

निष्कर्ष: शब्दों में छिपा जीवन

ये पाँच असामान्य शब्द - pauciloquent, bloviate, borborygm, brouhaha, और absquatulate - केवल शब्दकोश की विचित्रताएं नहीं हैं। ये मानव अनुभव के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। एक ओर हमारे पास pauciloquent की शांति है, तो दूसरी ओर bloviate का शोर। हमारे शरीर में borborygm की सहज ध्वनि है, तो समाज में brouhaha का कोलाहल। और जब सब कुछ असहनीय हो जाए, तो absquatulate करने का विकल्प भी है।

भाषा की सुंदरता इसी में है कि वह जीवन के हर सूक्ष्म अनुभव को नाम देने की क्षमता रखती है। ये दुर्लभ शब्द हमें याद दिलाते हैं कि दुनिया में अभी भी अनगिनत चीजें हैं जिन्हें नाम दिया जाना बाकी है, अनगिनत अनुभव हैं जिन्हें शब्दों में बांधा जाना बाकी है।

शब्द केवल संवाद के साधन नहीं हैं - वे सोचने, समझने और अनुभव करने के माध्यम हैं। जब हम नए शब्द सीखते हैं, तो हम वास्तव में दुनिया को देखने के नए तरीके सीख रहे होते हैं। और यही भाषा का असली जादू है।

विरोधाभासी दृष्टिकोण: शब्दों की विडंबना

क्या दुर्लभ शब्द वास्तव में उपयोगी हैं?

भाषाविदों और शब्द-प्रेमियों को यह सुनकर निराशा हो सकती है, लेकिन सच्चाई यह है कि pauciloquent, bloviate, borborygm, brouhaha और absquatulate जैसे दुर्लभ शब्द भाषा की समृद्धि के प्रमाण नहीं, बल्कि उसकी अनावश्यक जटिलता के उदाहरण हैं। ये शब्द भाषा को सुंदर नहीं बनाते - ये उसे दुर्गम बनाते हैं।

अभिजात्यवाद का हथियार

जब कोई व्यक्ति रोजमर्रा की बातचीत में "pauciloquent" का प्रयोग करता है जबकि "चुप" या "कम बोलने वाला" जैसे सरल विकल्प मौजूद हैं, तो वह वास्तव में क्या कर रहा है? वह संवाद नहीं कर रहा - वह अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता का प्रदर्शन कर रहा है। ये दुर्लभ शब्द भाषाई अभिजात्यवाद के साधन बन गए हैं, जो समाज को विभाजित करते हैं।

हिंदी में भी यही समस्या है। जब हम "अल्पभाषी" की जगह pauciloquent का प्रयोग करते हैं, तो हम अपनी ही भाषा को कमजोर मानने का संकेत देते हैं। यह उपनिवेशवादी मानसिकता का विस्तार है जहाँ अंग्रेजी शब्दों को अधिक परिष्कृत माना जाता है।

संवाद में बाधा

"Bloviate" शब्द को ही लें। यह शब्द स्वयं एक विरोधाभास है। जब हम किसी के आडंबरपूर्ण भाषण की आलोचना करने के लिए एक दुर्लभ, जटिल शब्द का प्रयोग करते हैं, तो क्या हम स्वयं वही नहीं कर रहे जिसकी हम आलोचना कर रहे हैं? "दिखावटी भाषण" या "बकवास" जैसे सीधे शब्द कहीं अधिक प्रभावी और ईमानदार हैं।

भाषा का उद्देश्य संवाद को सुगम बनाना है, जटिल नहीं। जब हम ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिन्हें 99% लोग नहीं समझते, तो हम संवाद नहीं कर रहे - हम दिखावा कर रहे हैं।

वैज्ञानिक शब्दावली की अति

"Borborygm" एक चिकित्सीय शब्द है, और इसका अपना स्थान है - चिकित्सा पाठ्यपुस्तकों में। लेकिन रोजमर्रा की भाषा में इसका क्या उपयोग? जब कोई कहता है "मेरे पेट में आवाज आ रही है" तो हर कोई समझ जाता है। "Borborygm" कहने से न तो अधिक स्पष्टता आती है और न ही कोई अतिरिक्त जानकारी मिलती है।

विज्ञान की भाषा और आम भाषा में अंतर होना चाहिए। हर तकनीकी शब्द को सामान्य प्रयोग में लाने की कोशिश भाषा को बोझिल बना देती है। यह उसी तरह है जैसे किसी से कहना "मुझे सेफलालजिया है" जबकि "सिरदर्द" कहना अधिक सरल और प्रभावी है।

सोशल मीडिया का शब्द-प्रदूषण

"Brouhaha" और "absquatulate" जैसे शब्द सोशल मीडिया युग की एक विचित्र घटना हैं। लोग ऐसे दुर्लभ शब्दों का प्रयोग करके खुद को बौद्धिक दिखाने की कोशिश करते हैं। ट्विटर और इंस्टाग्राम पर ऐसे शब्दों के स्क्रीनशॉट वायरल होते हैं, और लोग "आज मैंने एक नया शब्द सीखा" की पोस्ट करते हैं।

लेकिन यह सीखना नहीं है - यह शब्द-संग्रह है। इन शब्दों को याद रखना और उनका प्रयोग करना किसी को बेहतर संवादकर्ता नहीं बनाता। वास्तव में, यह संवाद को कृत्रिम और दूरी बना देता है।

भाषाई साम्राज्यवाद

इन अंग्रेजी शब्दों को महिमामंडित करना एक प्रकार का भाषाई साम्राज्यवाद है। हिंदी, उर्दू, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में पहले से ही समृद्ध शब्दावली है। "अल्पभाषी", "आडंबर", "गड़गड़ाहट", "हंगामा", "गायब होना" - ये सभी शब्द सीधे, स्पष्ट और प्रभावी हैं।

जब हम विदेशी दुर्लभ शब्दों को अपनी भाषा में घुसाते हैं, तो हम अपनी भाषा की क्षमता पर संदेह व्यक्त करते हैं। यह मानसिकता औपनिवेशिक युग की देन है जहाँ अंग्रेजी को श्रेष्ठ माना जाता था।

शब्द-संग्रह बनाम भाव-संप्रेषण

भाषा का उद्देश्य भावों और विचारों को संप्रेषित करना है, न कि शब्द-संग्रह का प्रदर्शन। एक अच्छा लेखक या वक्ता वह नहीं है जो सबसे दुर्लभ शब्दों का प्रयोग करता है, बल्कि वह है जो सबसे सरल तरीके से गहरी बात कह सकता है।

प्रेमचंद, कबीर, तुलसीदास - इन महान लेखकों ने जटिल शब्दों का सहारा नहीं लिया। उन्होंने आम बोलचाल की भाषा में गहन सत्य व्यक्त किए। उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे सुलभ हैं।

व्यावहारिक दृष्टिकोण

व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो इन दुर्लभ शब्दों का क्या उपयोग है? यदि आप किसी साक्षात्कार में "I tend to be pauciloquent" कहते हैं, तो संभावना है कि साक्षात्कारकर्ता आपको घमंडी समझेगा, भले ही आपका इरादा अच्छा हो। "I'm a person of few words" कहना कहीं अधिक प्रभावी है।

व्यावसायिक जगत में, कानूनी दस्तावेजों में, और शैक्षणिक लेखन में स्पष्टता सर्वोपरि है। जटिल शब्द भ्रम पैदा करते हैं, मुकदमे लाते हैं, और गलतफहमियों का कारण बनते हैं।

अंतिम विचार

भाषा एक जीवित चीज है जो विकसित होती रहती है। लेकिन विकास का अर्थ जटिलता नहीं है। कुछ शब्द दुर्लभ इसलिए हैं क्योंकि वे अनावश्यक हैं। प्राकृतिक चयन भाषा में भी काम करता है - उपयोगी शब्द जीवित रहते हैं, अनावश्यक शब्द मर जाते हैं।

हमें इन मरते हुए शब्दों को कृत्रिम रूप से जीवित रखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, हमें अपनी मातृभाषा की सरलता और शक्ति को अपनाना चाहिए। सच्ची बुद्धिमत्ता इस बात में नहीं है कि आप कितने कठिन शब्द जानते हैं, बल्कि इस बात में है कि आप कितनी स्पष्टता से अपनी बात कह सकते हैं।

शब्दों का प्रेम अच्छा है, लेकिन संवाद का प्रेम उससे भी महत्वपूर्ण है।